कौवेको भोजन देनेसे खुश होते हैं पितर

पूरे परिवार को देते हैं सुख, समृद्धि और आरोग्यताका आशीर्वाद

कौवे को भोजन देना भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण परंपरा है, जिसे पितरों की शांति से जोड़ा जाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस प्रक्रिया में की गई एक छोटी सी गलती भी आपके प्रयासों को निष्फल कर सकती है? गरुड़ पुराण में कौवे को भोजन देने की एक विशेष वैदिक विधि बताई गई है, जिसके पालन से ही पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। यह विधि न केवल पितृ दोष बल्कि कालसर्प दोष को भी शांत करने में सहायक मानी जाती है। सही तरीके से भोजन अर्पित कर आप अपने पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।



पितृपक्ष

पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करने वाले पितृपक्ष शुरू हो चुका है. हर साल भाद्रपद मास की पूर्णिमा तिथि से लेकर आश्विन मास की अमावस्या तक का समय श्राद्ध एवं पितृ पक्ष कहलाता है। पितृ पक्ष के दौरान पितरों की मृत्यु तिथि पर श्राद्ध पितृ दोष से मुक्ति मिलती है। पितरों के श्राद्ध का भोजन कौवे को खिलाने की परंपरा है। मान्यता है कि अगर कौवे ने श्राद्ध का भोजन खा लिया तो पितरों ने भी भोजन ग्रहण कर लिया। धार्मिक मान्यता के अनुसार, पितरों के लिए बनाए गए भोजन में से कौए, गाय, कुत्ते, चींटी और देवों का भोग निकालना जरूरी माना जाता है। कहते हैं कि पितर इन्हीं के रूप में धरती पर आते हैं। गरुड़ पुराण और अन्य धार्मिक शास्त्रों के अनुसार, कौवे को यमराज का संदेशवाहक माना जाता है. मान्यता है कि पितृ पक्ष के दौरान पूर्वज कौवे का रूप धारण करके धरती पर आते हैं और भोजन को स्वीकार करते हैं। माना जाता है कि कौवे द्वारा श्राद्ध का खाया गया भोजन सीधे पितरों की आत्मा तक पहुंचता है और उन्हें शांति देता है। कौए को भोजन कराने से यमराज भी प्रसन्न होते हैं. पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार भगवान इंद्र के पुत्र जयंत कौवे का रूप धारण करके पृथ्वी पर आए और माता सीता के पैरों में चोंच मार दी। इससे माता सीता के पैर से रक्त बहने लगा. यह देख भगवान श्रीराम ने तिनके का बाण चलाकर कौवे की आंख फोड़ दी। अपनी जान बचाने के लिए जयंत तीनों लोकों में भागा लेकिन किसी ने उसकी मदद नहीं की। अंत में उन्होंने वापस आकर भगवान श्रीराम और माता सीता से क्षमा मांगी। भगवान श्रीराम राम ने भी उन्हें माफ करके वरदान दिया कि पितृपक्ष के दौरान कौवों को अर्पण किया गया भोजन पितरों को मिलेगा। मान्यता है कि उसके बाद से ही पितृ पक्ष में कौवों को भोजन कराने की परंपरा चली आ रही है। मान्यता यह भी है कि पितृ पक्ष के दौरान कौवों को भोजन कराने से कुंडली में मौजूद पितृ दोष और कालसर्प दोष शांत होते हैं। कौवे को भोजन देने से पितर खुश होते हैं और पूरे परिवार को सुख, समृद्धि और आरोग्यता का आशीर्वाद देते हैं. कौवे को भोजन अर्पित करने की प्रक्रिया भी एक विशेष विधि के अनुसार की जाती है। उड़द की दाल, चावल और गुड़ का प्रसाद तैयार किया जाता है। इसे तर्पण स्थल पर रखा जाता है और कौवे को यह भोजन दिया जाता है। ज्योतिष और धार्मिक परंपराओं में कौवे का संबंध शनि देव से भी माना जाता है. कौवा शनि देव का वाहन बताया गया है, इसलिए कौवे को भोजन कराने को शनि से संबंधित उपायों में शामिल किया जाता है. शनिवार के दिन कौवे को भोजन कराने की भी परंपरा है।

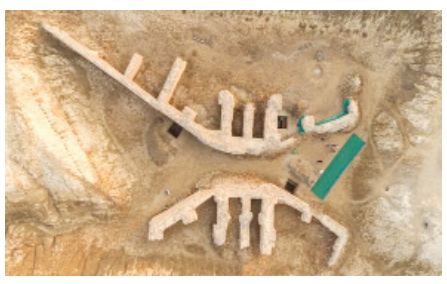
अंतिम माना जाता है ब्रह्मकपालमें किया गया पिंडदान



पितृपक्ष की शुरुआत हो चुकी है और हिंदू धर्म में पितरों की आत्मा की शांति, तृप्ति और मोक्ष के लिए पिंडदान और श्राद्ध का विशेष महत्व बताया गया है। हर साल आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से श्राद्ध कर्म की शुरुआत होती है और आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि यानी सर्वपितृ अमावस्या को समापन होता है। पितृपक्ष के दौरान पितरों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान आदि कार्यक्रम शुरू हो जाते हैं। ऐसे में देश में कई ऐसे तीर्थ हैं, जहां पितरों के लिए श्राद्ध कर्म किए जाते हैं, लेकिन उत्तराखंड के बदरीनाथ धाम के पास स्थित ब्रह्मकपाल को लेकर एक ऐसी खास मान्यता है, जो इसे दूसरे पिंडदान स्थलों से अलग बनाती है.कहा जाता है कि ब्रह्मकपाल में किया गया पिंडदान अंतिम माना जाता है। यहां पिंडदान करने के बाद उसी पूर्वज के लिए दोबारा पिंडदान करने की जरूरत नहीं रहती। ब्रह्मकपाल बदरीनाथ मंदिर के पास अलकनंदा नदी के तट पर स्थित एक पवित्र स्थल है. यहां श्रद्धालु अपने दिवंगत परिजनों और पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध और पिंडदान करते हैं. यहां किए गए श्राद्ध कर्म को मोक्ष से जोड़ा जाता है। ब्रह्मकपाल की महिमा से जुड़ी एक बेहद रोचक पौराणिक कथा भगवान शिव और ब्रह्माजी से जुड़ी है। मान्यता के अनुसार, सृष्टि की रचना के समय भगवान ब्रह्मा के पांच मुख थे। एक समय उनके भीतर अहंकार उत्पन्न हो गया और उन्होंने स्वयं को सर्वोच्च मानना शुरू कर दिया. कहा जाता है कि ब्रह्मा के इसी अहंकार को समाप्त करने के लिए भगवान शिव ने उनका पांचवां सिर काट दिया, लेकिन इसके बाद भगवान शिव पर ब्रह्महत्या का दोष लग गया। ब्रह्मा का कटा हुआ सिर उनके हाथ से चिपक गया और काफी प्रयासों के बाद भी वह अलग नहीं हुआ। इस पाप से मुक्ति पाने के लिए महादेव भिक्षाटन करते हुए विभिन्न स्थानों पर गए. जब भगवान शिव बदरी क्षेत्र पहुंचे तो ब्रह्मा का कपाल उनके हाथ से अलग होकर गिर गया. जिस स्थान से इस कथा को जोड़ा जाता है, वही आगे चलकर ब्रह्मकपाल कहलाया।

दुनियाका सबसे पुराना पुल

दुनिया की सबसे पहली सड़क और इमारत का जिक्र जब भी होता है, तो हर किसी के मन में यह सवाल जरूर उठता है कि आखिर इंसानों द्वारा बनाया गया सबसे पहला पुल कहां होगा? इस सवाल का जवाब छुपा है मध्य पूर्व के देश इराक के रेगिस्तानी इलाके में. आधुनिक इराक के बगदाद और बसरा शहर के ठीक बीचो-बीच गिरसू नाम का एक प्राचीन शहर बसा हुआ है. लगभग 5,000 साल पुराना यह शहर सुमेरियन



सभ्यता की राजधानी हुआ करता था। इसी पौराणिक शहर की पुरातात्विक खुदाई में पकी हुई लाल ईंटों से बना एक ऐसा ढांचा मिला है, जिसे आधुनिक विज्ञान और इतिहासकार दुनिया का सबसे पुराना पुल मानते हैं। इसका इतिहास करीब 4,000 साल पुराना है। इंसानी इंजीनियरिंग की इस अद्भुत मिसाल की कहानी जितनी हैरान करने वाली है, उतनी ही दर्दनाक भी रही है। इस ऐतिहासिक शहर की पहली खुदाई साल 1877 में फ्रांसीसी पुरातत्वविदों की एक टीम ने शुरू की थी। उस दौर में संरक्षण और खुदाई की आधुनिक तकनीकें न होने के कारण इस पुरातात्विक स्थल को भारी नुकसान पहुंचाया गया। सही देखरेख न होने की वजह से इस प्राचीन शहर पर चोरों और खजाना ढूंढने वाले डकैतों का कब्जा हो गया. अनुमान लगाया जाता है कि गिरसू शहर की मिट्टी तले दबी 35,000 से 40,000 दुर्लभ क्यूनीफॉर्म मिट्टी की पट्टिकाएं और अनमोल कलाकृतियां रातों-रात लूट ली गईं और उन्हें अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेच दिया गया, जबकि फ्रांसीसी टीम केवल 4,000 पट्टिकाएं ही बचा सकी थी।

मिथिलाकी अनोखी मान्यता

मिथिला में एक पुरानी मान्यता है जिसे कई लोग आज भी मानते आ रहे हैं। एक तरफ जहां लोग कोई बीमारी या शारीरिक कष्ट होने पर डॉक्टर के पास भगते हैं वहीं गांवों में कई चीजों का उपचार वहां की स्थानीय मान्यता के आधार पर लोग करते हैं। उदाहरण के लिए कई जगह चिकेनपॉक्स जिसे स्थानीय भाषा में लोग मोती झाला या माता बुखार आदि कहते हैं। कई जगह लोग इसे दैवीय



प्रकोप मानते हैं और इसका इलाज कराने की जगह घर में पूजा के जरिए इसका उपचार किया जाता है। इसी तरह मधुबनी में एक खास किस्म की बीमारी होने पर भगवान शंकर को बैंगन का भार चढ़ाने की मान्यता है। तो चलिए जानते हैं कि क्या है वह बीमारी और उनके उपचार के लिए पूरी मान्यता क्या है। कई लोगों के चेहरे पर, गर्दन या फिर बॉडी के किसी पार्ट्स पर अहिला हो जाता है। अहिला यानी काला या लाल रंग का मोटा तिल जैसा या फिर दाग-धब्बा हो जाता है। इसके उपचार के लिए मिथिलांचल के लोगों के बीच अलग ही मान्यता है। कई लोगों का मानना है कि भगवान महादेव को बैंगन का भार चढ़ाने से यह बीमारी ठीक हो जाती है। बैंगन का भार चढ़ाने के लिए बांस की या तुलसी की लकड़ी लेकर उसके दोनों किनारों पर बैंगन को फंसा देते हैं फिर दोनों तरफ बैंगन के भार से लदी इस लकड़ी को उठाकर शिव जी के मंदिर में चढ़ा देते हैं। मान्यता है कि इसे चढ़ाने से अहिला सही हो जाता है।

अचानक क्यों गिर गया तापमान

उत्तर भारत में आमतौर पर 15 अक्टूबर के बाद सर्दी महसूस होती है लेकिन इस बार सितंबर के अंतिम दिनों में ही ठंड महसूस होने लगी है। ऐसे में सवाल है कि क्या उत्तर भारत में सर्दी का मौसम आ चुका है, या फिर यह किसी जलवायु परिवर्तन का नतीजा है? क्या मौसम के अचानक करवट बदलने के पीछे अल नीनो जैसी कोई स्थिति तो जिम्मेदार नहीं है। दरअसल, दिल्ली सहित उत्तर भारत के अधिकतर इलाकों में बीते कुछ दिनों में मौसम में जबर्दस्त बदलाव देखा गया है। बारिश, आसमान में बादल और तापमान में गिरावट की वजह से अचानक ठंड महसूस होने लगी है। आमतौर पर सितंबर महीने में ऐसा मौसम नहीं होता है. बीते संडे को दिल्ली का न्यूनतम तापमान गिरकर 21 डिग्री पर आ गया. यह बीते 25 सालों में सितंबर महीने में सबसे कम तामम्मान था। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि सितंबर के आखिर में महसूस हो रही यह ठंड अभी सर्दी की दस्तक नहीं है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक मौजूदा ठंड के पीछे अल नीनो नहीं, बल्कि स्थानीय और क्षेत्रीय मौसम प्रणालियों का असर ज्यादा है। बीते दिनों उत्तर भारत के कई हिस्सों में बारिश हुई. दिल्ली-एनसीआर भी इससे अछूता नहीं रहा। लगातार बादल छाए रहने से जमीन तक पहुंचने वाली धूप कम हुई। बारिश और ठंडी हवाओं ने तापमान को और नीचे ला दिया. दिल्ली में 27 सितंबर को न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। यह सामान्य से करीब तीन डिग्री कम था और सितंबर का 25 साल में दूसरा सबसे कम न्यूनतम तापमान था. इससे पहले 2008 में सितंबर में न्यूनतम तापमान 20.8 डिग्री तक गया था। यानी दिल्ली में जो ठंड महसूस हुई, वह असामान्य जरूर थी, लेकिन इसे सीधे सर्दी के मौसम की शुरुआत मान लेना अभी जल्दबाजी होगी। इस बदलाव के पीछे एक बड़ी वजह मध्य और उत्तर भारत में सक्रिय मौसम प्रणाली रही. बारिश के साथ बादलों की मोटी परत बनी रही। ऐसे में दिन में भी तापमान सामान्य से नीचे चला गया। दिल्ली में 27 सितंबर को अधिकतम तापमान भी करीब 29 डिग्री रहा, जो सामान्य से लगभग पांच डिग्री कम था. कई इलाकों में इससे भी कम तापमान दर्ज हुआ. दिल्ली रिज इलाके में न्यूनतम तापमान 16.8 डिग्री तक पहुंच गया.इसके साथ



ही पश्चिमी विक्षोभ और मध्य भारत के आसपास बनी मौसम प्रणाली के बीच तालमेल ने उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में बारिश की स्थिति बनाई. पश्चिमी विक्षोभ आमतौर पर सर्दियों में उत्तर भारत के मौसम को प्रभावित करते हैं, लेकिन मौसम के संक्रमण वाले दौर में भी इनका असर हो सकता है. पहाड़ी इलाकों में तो इसका असर और ज्यादा साफ दिखा. हिमाचल प्रदेश के ऊंचाई वाले इलाकों और उत्तराखंड में बर्फबारी की खबरें सामने आईं.अभी ऐसा कहना सही नहीं होगा. मौसम विभाग के पूर्वानुमान के मुताबिक मौजूदा ठंड का दौर अस्थायी है. जैसे-जैसे बारिश और बादल कम होंगे, धूप बढ़ेगी और तापमान फिर ऊपर जा सकता है. दिल्ली में 30 सितंबर और 1 अक्टूबर के आसपास तापमान में बढ़ोतरी की संभावना जताई गई है. यानी सितंबर के आखिरी दिनों में मिली ठंड को फिलहाल मानसून की विदाई के दौरान हुआ तापमान में उतार-चढ़ाव समझना ज्यादा सही होगा. दिल्ली में दक्षिण-पश्चिम मानसून 23 सितंबर को ही वापस जा चुका था, जो सामान्य तारीख 25 सितंबर से दो दिन पहले है. इसके बाद मौसम धीरे-धीरे शुष्क होने की तरफ बढ़ना था, लेकिन इसी बीच बारिश और सक्रिय मौसम प्रणालियों ने तापमान का समीकरण बदल दिया.यहां अल नीनो की भूमिका जरूर महत्वपूर्ण है, लेकिन वह इस सितंबर की अचानक आई ठंड की वजह नहीं है. अल नीनो प्रशांत महासागर के भूमध्यरेखीय हिस्से में समुद्र की सतह के असामान्य रूप से गर्म होने की स्थिति है. इसका असर हजारों किलोमीटर दूर तक मौसम के पैटर्न पर पड़ सकता है. बारिश, तापमान और वायुमंडल में बदलाव इसके बड़े प्रभावों में शामिल हैं.

गायके लिए एक करोड़का लग्जरी बंगला, सुबह-शाम आरती, पहनती हैं २४ लाखकी ज्वेलरी



गाय को पहली रोटी खिलाने की परंपरा पूरे देश में है। गाय को माता लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है। राजस्थान के बिजनेसमैन तो एक करोड़ का बंगला अपनी पालतू गाय राधा के लिए बनवा रहे हैं। राधा महल दो मंजिला आलीशान बंगला होगा। संगमरमर के फर्श, आकर्षक डिजाइन और हर सुख-सुविधा से लैस होगा। नरेंद्र के खुद के घर से सवा फीट ऊंचा होगा। राधा की सेवा में चार लोग तैनात रहते हैं। सुबह-शाम राधा की आरती उतारी जाती है। राधा देसी घी के लड्डू खाती है। 10 किलो चांदी के आभूषण पहनती है। बिजनेसमैन राधा को अपने परिवार की सबसे सम्मानित सदस्य मानते हैं। राधा के प्रति इतनी अटूट भक्ति के पीछे की वजह क्या है,राधा जब दो साल की थी, तब नरेंद्र पुरोहित उसे पथमेड़ा गौशाला से बैंड बाजे के साथ घर लेकर आए थे। यह बात 2015 की है. राधा ने घर आते ही उनकी किस्मत पलट दी. सिर्फ 1500 रुपये की नौकरी करने वाले पुरोहित के बिजनेस में बढ़ोतरी हुई। फिर वो राधा के भक्त हो गए।

द्वारकाके बाद अब पूम्पुहार : समुद्रमें समा चुके हैं भारतके प्राचीन शहर

समुद्र के नीचे सिर्फ रेत और चट्टानें नहीं बल्कि सभयताओं का इतिहास भी होता है। अब तक भारत के समुद्री तटों के पास पानी के अंदर कई ऐसे साक्ष्य मिले हैं जो ये साबित करते हैं कि यहां कभी बंदरगाह, बस्तियां और आबाद शहर रहे होंगे। हाल ही तमिलनाडु के तट से दो किमी दूर समुद्र में पूम्पुहार शहर और उससे जुड़े साक्ष्य मिले हैं। तमिलनाडु पुरातत्व विभाग के मुताबिक ऐसा हो सकता है कि सुनामी की वजह से ये शहर समुद्र में डूब गया हो. हालांकि समुद्र में डूबने वाला यह अकेला शहर नहीं है। इससे पहले गुजरात के द्वारका, कर्नाटक का महाबलीपुरम समेत अन्य शहरों के समुद्र में डूबने के साक्ष्य मिल चुके हैं। तमिलनाडु का पुरातत्व विभाग इन दिनों पूम्पुहार शहर की खोज में जुटा हुआ है। कभी कावेरी नदी से बिल्कुल सटा ये शहर अब समुद्र के अंदर समा चुका है। हाल ही में पुरातत्व विभाग की टीम ने यहां से 200 से ज्यादा मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े, टेराकोटा रिंग वेल और टॉरपीडो जार खोजे थे। जहां ये साक्ष्य मिले हैं वह समुद्री तट रेखा से तकरीबन दो किलोमीटर अंदर है। पुरातत्व विभाग के मुताबिक इसे कभी कावेरीपूम्पट्टिनम भी कहा



जाता था। जो चोल साम्राज्य का प्रमुख बंदरगाह हुआ करता था. पहले यहां जमीन की खोदाई ने घाट जैसी संरचना मिली थी, अब समुद्र के अंदर मिले साक्ष्यों ने खोज के दायरे को और बढ़ा दिया है।

द्वारका -गुजरात के सौराष्ट्र तट पर द्वारका भारत का सबसे प्राचीन ऐसा शहर माना जाता है तो समुद्र में डूब चुका है. धार्मिक ग्रंथों में भी द्वारका के समुद्र में समा जाने का वर्णन मिलता है. पुरातत्व विभाग भी यहां कई ऐसे पुरातात्विक अवशेष खोज चुका है, जिससे इस शहर के भव्य और समृद्ध होने के साक्ष्य मिले हैं। 1980 के दशक में समुद्री पुरातत्वविद् एस. आर. राव के नेतृत्व में हुई खोज में पानी के अंदर किले जैसी दीवारें मिट्टी के बर्तन और दूसरी वस्तुएं मिली थीं।

मुजिरिस- केरल का मुजिरिस प्राचीन भारत के सबसे अहम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाहों में माना जाता है. ऐसा कहा जाता है कि इसका संबंध रोमन साम्राज्य और पश्चिम एशिया के साथ समुद्री व्यापार से रहा होगा. समुद्र ने मुजिरिस क्षेत्र के विनाश में अहम योगदान निभाया होगा. रिसर्च में इसे पेरियार नदी के मुहाने के पास बताया गया।

लोथल- गुजरात के लोथल शहर के बारे में आपने इतिहास में पढ़ा होगा। इसे हड़प्पा सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह माना जाता था। यह शहर समुद्र के नीचे तो नहीं है, लेकिन जमीन पर भी इसके अवशेष ही रह गए हैं। हड़प्पा काल में लोथल समुद्री व्यापार के सबसे बड़े केंद्रों में से एक था। यूनेस्को के मुताबिक शहर की बाहरी दीवारों को इस तरह का बनाया गया था, जिससे समुद्र में आने वाले ज्वार भाटा का इस पर असर न हो. पुरातत्व विभाग के मुताबिक इसी तरह की समुद्री बाढ़ की वजह से ही शहर खत्म हुआ होगा।

खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक
अर्शविदा कैप्सूल


सुविचार
जो लोग हर दिन अपने सपनों के लिए मेहनत करते हैं, वही असल में जीते हैं।
• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार
Customer Care : 9628078000
www.rphealthgroup.com
Also available at TATA 1mg | amazon | Flipkart



प्रेम का रहस्य

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

जीवन प्रेम से उत्पन्न होता है और जीवन प्रेम की ही तलाश करता है। जीवन का लक्ष्य भी प्रेम है, और जीवन प्रेम से ही कायम रहता है। इस ग्रह पर ऐसा कोई भी प्राणी या जीवित इकाई नहीं है, जिसने प्रेम को न जाना हो या जो प्रेम से रहित हो। यदि प्रेम सृष्टि में सर्वत्र विद्यमान है, तो फिर प्रेम की तलाश क्यों है? हम प्रेम को क्यों खोजते हैं? जब ये प्रश्न मानव-मन को उद्वेलित करने लगते हैं, तभी किसी की आध्यात्मिक यात्रा का प्रारंभ होता है। प्रेम क्या है? भावनाओं का वर्णन करना सबसे कठिन कार्य है-किसी भी भावना का। भावनाओं को शब्दों में बाँधना या किसी को बौद्धिक रूप से यह समझाना सरल नहीं है कि वह भावना क्या है। यह एक अत्यंत सूक्ष्म और गहन अनुभव है। प्रेम इस सृष्टि का मूल आधार है। वह कभी समाप्त नहीं हो सकता; वह सदैव विद्यमान रहता है। प्रेम दीजिए-वह कई गुना होकर आपके पास लौटेगा। प्रेम वास्तव में कोई मार्ग नहीं है; प्रेम स्वयं ही घर है। प्रेम आपको आपके मूल स्वरूप में वापस ले आता है। प्रेम कोई क्रिया या कर्म नहीं है, यह एक अवस्था है-एक परिणाम है। तत्पश्चात प्रश्न उठता है-मैं इसे कैसे प्राप्त करूँ? यह इच्छा का विषय नहीं हो सकता। जब इच्छाएँ शांत हो जाती हैं, तभी प्रेम का अनुभव संभव होता है।

प्रेम को केवल उसकी इच्छा करने से प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रेम तो इच्छाओं के समाप्त होने पर ही प्रकट होता है।प्रेम से विरह उत्पन्न होता है, और विरह ही भगवान है; प्रेम ही भगवान है। विरह के बिना जीवन अर्थहीन हो जाता है। विरह उत्पन्न करना गुरु का कार्य है। लोग संसार के लिए दुःखी होते हैं, किंतु यदि संसार के दुःख से ऊपर उठकर भगवान के लिए विरह उत्पन्न हो जाए, तब साधना पूर्ण हो जाती है। इसलिए विरह का जन्म होना अत्यंत शुभ है।

प्रेम को इच्छा का विषय न बनाइए। इच्छा का स्वभाव है-अभी नहीं, भविष्य में कुछ। यह बेचैनी उत्पन्न करती है, जबकि प्रेम का प्रभाव शीतलता से परिपूर्ण होता है। प्रेम को अपनी इच्छाओं का लक्ष्य न बनाइए। जब इच्छाएँ शांत हो जाती हैं, तब यह अनुभव होता है कि प्रेम तो यहीं है। प्रेम सभी इच्छाओं का अंतिम लक्ष्य है, और जब उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, तब घृणा और क्रोध उत्पन्न होते हैं। प्रेम की इच्छा अन्य अपूर्णताओं को जन्म देती है, जैसे निराशा। चाहे इच्छा पूर्ण हो या अपूर्ण, वह अंततः निराशा ही लाती है-यह इच्छा का स्वभाव है। प्रेम को केवल उसकी इच्छा करने से प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रेम तो इच्छाओं के समाप्त होने पर ही प्रकट होता है।प्रेम से विरह उत्पन्न होता है, और विरह ही भगवान है; प्रेम ही भगवान है। विरह के बिना जीवन अर्थहीन हो जाता है। विरह उत्पन्न करना गुरु का कार्य है। लोग संसार के लिए दुःखी होते हैं, किंतु यदि संसार के दुःख से ऊपर उठकर भगवान के लिए विरह उत्पन्न हो जाए, तब साधना पूर्ण हो जाती है। इसलिए विरह का जन्म होना अत्यंत शुभ है।

दमदार वापसी कर रही हैं विद्या बालन

एक्ट्रेस विद्या बालन ने तमिल सिनेमा के जरिए पॉवरफुल कमबैक किया है। अभी कुछ ही दिन पहले रजनीकांत की जेलर 2 से उनका धांसू लुक सामने आया था। अब उनके हाथ एक और बड़ी कॉलीवुड प्रोजेक्ट लगा है। विद्या फिल्ममेकर आर. बाल्की के साथ 17 साल बाद वापसी करने जा रही हैं। विद्या एक नई तमिल फिल्म के जरिए आर बाल्की के साथ दोबारा काम करने जा रही हैं। इससे पहले उन्होंने पा फिल्म में साथ काम किया था। एक्ट्रेस ने एक बीटीएस पोस्ट के जरिए फैंस को इसकी जानकारी दी। विद्या ने फिल्म की शूटिंग शुरू कर दी है। मूवी का टाइटल अभी तय नहीं हुआ है। हालांकि, मेकर्स ने इसकी कहानी या विद्या के किरदार के बारे में कोई और जानकारी नहीं दी है। विद्या ने अपने इंस्टाग्राम पर सेट से एक तस्वीर पोस्ट की, जिसमें वह चश्मा पहने, लंबी चोटी बनाए और हाथ में स्क्रिप्ट पकड़े हुए नजर आ रही हैं। कैप्शन में उन्होंने लिखा,नई शुरुआत के साथ। आर बाल्की और विद्या बालन की साल 2009 में रिलीज हुई सुपरहिट फिल्म पा ने भारतीय सिनेमा के लिए एक ऊंचा मानक स्थापित किया था। इसकी कहानी, कलाकारों और एक्टिंग को खूब पसंद किया गया। हालांकि फिल्म का शीर्षक, कहानी और पूरी कास्ट के बारे में अभी कोई जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन इसकी शूटिंग आधिकारिक तौर पर शुरू हो चुकी है। विद्या का ध्यान अब रीजनल और मल्टी-लैंग्वेज सिनेमा की ओर बढ़ रहा है।

विद्या ने अपने इंस्टाग्राम पर सेट से एक तस्वीर पोस्ट की, जिसमें वह चश्मा पहने, लंबी चोटी बनाए और हाथ में स्क्रिप्ट पकड़े हुए नजर आ रही हैं। कैप्शन में उन्होंने लिखा, नई शुरुआत के साथ। आर बाल्की और विद्या बालन की साल 2009 में रिलीज हुई सुपरहिट फिल्म पा ने भारतीय सिनेमा के लिए एक ऊंचा मानक स्थापित किया था।

आर. बाल्की के साथ अपनी हाल ही में घोषित फिल्म के अलावा, वह अनीस बज़्मी के निर्देशन में बनने वाली एक बॉलीवुड कॉमेडी फिल्म में भी मुख्य भूमिका निभाएंगी। इसमें उनके साथ अक्षय कुमार और राशी खन्ना भी होंगे।

